भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस वक्तव्य

दिनांकः 18 सितंबर, 2021

हिंदुत्व को चुनौती देते हुए 10 महीनों से विजय पथ में आगे बढ़ रहे भारत देश के किसान संघर्ष को क्रांतिकारी जयजयकार

27 सितंबर, 2021 को भारत बंद को पूरी तरह सफल बनाएं

5 सितंबर को मुजफ्फरपुर में भारतीय किसान यूनियन (बीकेयू) समेत संयुक्त किसान मोर्चा सहित केंद्रीय सरकार के कृषि कानूनों को विरोध करने वाले कई किसान संगठनों के आह्वान पर प्रस्तावित किसान महापंचायत, यह पिछले 10 महीनों से जारी किसान आंदोलन में अभूतपूर्व है, से परेशान उत्तरप्रदेश की आदित्यनाथ योगी सरकार ने उसमें फूट डालने के लिए कई सामजिशें की। बड़ी संख्या में उस सभा में किसान शिरकत न हो, इसके लिए तमाम राष्ट्रीय राजमार्गों को, विशेषकर हरियाणा, पंजाब समेत यूपी के बाकी जिलों के सड़कों की मीरट जोन (मीरट, घाजियाबाद, शामली व भागपत) से लाए गए पीएसी (राज्य के सशस्त्र पुलिस) बलों से नाकेबंदी की। सभास्थल पर डिजिटल कमेरे से लैस विशेष ड्रोनों से पहारा करवाया। पूरे शहर में सीसीटीवी कमेरे लगाए गए। केंद्र में भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आने में, उत्तरप्रदेश में धार्मिक दंगे बहकाने में हिंदुत्व शक्तियों के लिए एक मुख्य केंद्र रहा मुजफ्फरपुर में अभूतपूर्व ढंग से किसानों की सभा आयोजित करना 2013 में सत्ता पर कब्जा जमाने के लिए हिंदुत्व शक्तियों के हमले मारे गए 62 लोगों की न सिर्फ याद दिलाती है, बल्कि बेघर हुए 50 हजार लोगों की सांत्वना होगी। योगी सरकार ऐसी चाण्क्य नीति से कि पश्चिम बंग के विधानसभा चुनावों में जिस तरह से हार का सामना करना पड़ा था, उसी तरह उत्तरप्रदेश व उत्तरखंड विधानसभा के चुनावों में उसी हश्र का सामना होने की हालात है और अपनी सरकार की किसानों के प्रति वादा-खिलाफी को उजागर हो सकते हैं, इसलिए उस सभा को होने नहीं देने मुजफ्फरनगर को खाखियों से भर दी है। किंतु, कृषि प्रधान भारत देश में लड़ने वाले किसानों को कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती, देश के 22 राज्यों से बड़े पैमाने पर शिरकत हुए युवा समेत किसान महिलाओं के साथ संपन्न हुए उस महापंचायत ने साबित कर दिखाया। उस सभा में शामिल किसानों को हमारी पार्टी की तरफ से क्रांतिकारी जयजयकार।

पिछले 10 महीनों से देश में जारी जुझारू किसान आंदोलन को और तेज करने, उसके तहत 27 सितंबर को भारत बंद पालन करने उस सभा द्वारा दिए गए आह्वान का हमारी पार्टी पूरी तरह समर्थन करता है। हमारी पार्टी पहले ही, उत्तरप्रदेश की विधानसभा के चुनावों में हिंदुत्व शिक्तियों को हराने का आह्वान इस किसान आंदोलन से देना चाहिए, ऐसी अपील कर रखी है, इसलिए 'भाजपा को हराने के लिए कमर कसें' का आह्वान का भी स्पष्ट रूत से समर्थन करता है। इस अवसर पर हमारी पार्टी की केंद्रीय कमेटी और एक बार स्पष्ट करती है कि लगभग 300 की संख्या में किसान संगठनों को समन्वय करते हुए निरंकुश कृषि कानूनों को वापस करने की मांग को लेकर हिंदु-मुस्लिम किसानों के साथ एकजुट होकर लड़ रहे संगठनों से हमारी पार्टी के नेतृत्व में तमाम राज्यों के क्रांतिकारी किसान संगठन कंधे से कंधे मिलाकर लड़ेगी। संयुक्त किसान मोर्चा से हमारी पार्टी की केंद्रीय कमेटी का अपील है कि देश को बेचने वाली दुष्ट शक्तियों से देश को व देश की किसान, व्यापारी, कर्मचारी व युवा को बचाने के लक्ष्य से आयोजित मुजफ्फपुर पंचायत को जिस तरह से सफल बनाया गया है, उसी तरह देशभर में प्रस्तावित 25 महापंचायतों को अभूतपूर्व ढंग से सफल बनाएं। मुजफ्फरपुर समेत उसके आसपास के गांवों की जनता लगभग 5,000 स्टाल लगाकर महापंचायत में शिरकत 22 राज्यों के किसानों को मुफ्त सुविधाएं उपलब्ध करना अभिनंदनीय है। हमारी आशा है कि इस अच्छी सहकारी परंपरा को भविष्य में होने वोले तमाम सभाओं में जारी रखी जाए।

दुष्ट हिंदुत्व शक्तियों से पुकारा जाता है कि किसान उग्रवादी है या टर्बन नक्सली है या दूसरा नाम से। इसके पीछे उसकी मंशा यह है कि कल उन्हें उनसे और खतरा महसूस होने पर, निरंकुश व क्रूर कानूनों के आड में उन्हें दबोच कर सलाखों की पीछे ठूंसना। तमाम किसानों से हमारी पार्टी का अपील है कि भारत के किसानों के प्रति मृत्युघंटा भजाते हुए कार्पोरेट घरानों के हितों को पूरा करने के लिए प्रस्तावित कृषि कानूनों को वापस करने के लिए जारी आंदोलन में जितने भी अड्चने सामने आ जाए, जितने भी हमले हो जाए, इस आंदोलन से आत्मसात होकर लड़ें। अब तक इस आंदोलन में पुलिसिया दमन समेत अलग-अलग अन्य कारणों से लगभग 500 से अधिक किसान अपनी जान गंवायीं। किसान आंदोलन को बदनाम कर उसे कुचलने के लिए 26 जनवरी को लालकिले पर उस आंदोलन से किसी भी नाता नहीं होने वाले झंडों को पहराने से लेकर उस किसान आंदोलन को विघाटित करने हिंदुत्व शक्तियां कई साजिशें रची। भगवा केंद्रीय नेताओं द्वारा किसानों की संगठित शक्ति को नुकसान करने के लिए कोरोना महामारी फैलाने की नकाम साजिशें की गयी। किसान आंदोलन के नेता राकेश

तिकायत की कॉफिले पर हमले किए गए। समझौताविहीन संघर्ष कर रहे किसान संगठनों के बीच फूट डालकर उनके बीच एकता पर धक्का पहुंचाने की कई साजिशें की गयी। बावजूद किसानों के संकल्प में कोई कमी नहीं आया। इसके बाद केंद्र सरकार कृषि कानूनों को अनिश्चित काल तक स्तगित करना पड़ा। यह उस आंदोलन द्वारा हासिल कई जीतों में से महत्वपूर्ण जीत है। पश्चिम बंग राज्य विधानसभा के चुनावों में हार का शिकर हुए हिंदुत्व शक्तियां देश में आगामी वर्षों में होने वाले चुनावों में हार का डर से बचने की मंशा से यह वादा करने से कोई आश्चर्य नहीं है कि निरंकुश कानूनों को वापस करेंगो। हमारी पार्टी का अपील है कि परम धोखेबाजी ब्राह्मणीय हिंदुत्व शक्तियों द्वारा की जाने वाली वादों का विश्वास नहीं करें, लोकसभा में उन कानूनों को वापस लेने तक किसान आंदोलन को बहुत ही सावधानी से जारी रखें। संसदीय जनवादी देश का ढंका भजाने वाला हमार देश में इस तरह के विश्वासघात के अनगिनत अनुभव हैं। जनता को आह्वान देना चाहिए कि कृषि कानूनों को वापस लेने पर तत्पर नहीं होने वाली किसी भी राजनीतिक पार्टी को वोट नहीं दें।

देश में किसान आत्महत्याएं पूरी तरह थमी नही हैं। इस वर्ष बारिश के अभाव से खरीफ व रबी फसल नुकसान होने की परिस्थिति दिख रही है। ओड़िशा में इस वर्ष पिछले 23 वर्षों के बाद सबसे कमी बारिश दर्ज हुई है। केंद्र व राज्य सरकारें किसानों की जमीन को हड़पने की मंशा से आंशूपोछ सुधार कार्यक्रम जो कभी नहीं लागू होते, को एलान कर रही हैं। पंजाब में अधिक बिजली दर वसूलने की वजह से किसानों का कमर टूटा जा रहा है। तेलंगाना में हो, पंजाब हो दलितों व गरीबों के लिए देने वाली प्रस्तवित कृषि जमीन का कोई पता नहीं है। दूसरी तरफ किसानों की जमीन कार्पोरेट घरानों को कौड़ियों की मोल पर बेचा जा रहा है। ऐसी स्थिति में इस देश की कृषि व किसानों को बचाने के लिए कमर कसें। देश की संसाध नों को बचाने देश के मूलवासी पहले के मुकाबले जुझारू रूप से लड़ रहे हैं। जंगलों में लाखों की संख्या में पुलिस बलों की जरूरत नहीं है, ग्रामसभाओं की अनुमति के बगैर कहीं भी पुलिस थाना/कैंप नहीं बिठना चाहिए, कहते हुए शासक वर्गों सुरक्षा बलों द्वारा जारी हत्याओं व अत्याचारों को विरोध करते हुए, उन बलों को वापस लेने की मांग को लेकर आंदोलनरत हैं। बीजापुर जिले के सिलिंगेर जनधरना एक नमूने के तौर पर चार महीनों से अधिक समय से जारी है। इन आंदोलनों से किसान आंदोलन हाथ मिलाने की जरूरत है, यह हमारी पार्टी का अपील है और स्पष्ट करता है कि तमाम मजदूर, किसान, कर्मचारी, छात्र, दलित, आदिवासी, मुस्लिम, महिलाओं के आंदोलन समन्वय के साथ चलाने की जरूरत है, इसके बगैर देश को बचाना मुश्किल है।

देश में अभूतपूर्व स्तर पर बेरोजगार बढ़ी है। मजदूरों की जीवन रोजगार की सुरक्षा के अभाव से और बढ़ती काम के घंटे की बोझ से जूझ रही हैं। तेल की दाम बढ़कर, रोजमर्रा की चीजों की दरें आसमान छू रहे हैं। इससे आम जनता की क्रयशक्ति बिगड़ रही है। शासकों ने कोरोना महामरी को बहाना बनाकर अंधाधुंध लाकडाउन घोषणा करते हुए प्रवासी मजदूरों की जान ले रही हैं और मूर्खतापूर्ण निर्णयों से कोरोना बीमारी फैला रहे हैं तथा जनता को न्यूनतम इलाज से वंचित रखकर लाखों की संख्या में मौतों के लिए कारण बन रहे हैं। देश तमाम क्षेत्रों में तीव्र संकट का सामना कर रहा है। दूसरी तरफ संयुक्त किसान मोर्चा के नेताओं के अनुसार शासकों ने देश को विश्व बाजार में बेच रहे हैं। इस देश को हम ही बचाना है। सांस्कृतिक राष्ट्रीय गाना गाने वाले संघ परिवार के गुट विगत 10 वर्षों से अधिक समय से तमाम क्षेत्रों में साम्राज्यवादी आर्थिक नीतियों को आक्रामक रूप से लागू करते हुए 'आत्मनिर्भर' के नाम पर ही देश की सम्प्रभुता को गिरवी रख रहे हैं।

इस देश ने नाम के वास्ते आजाद होकर 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर '*आजादी का अकृत महोत्सव*' कहते हुए शासकों ने समारोह मनाने आह्वान कर रहे हैं। इसे विरोध करते हुए, जैसाकि आंदोलनरत किसान आवाज उठा रहे हैं कि विश्व बाजार में बेचा जा रहे देश को बचाएं और उसे धर्मनिरपेक्ष, जनवादी व स्ववलंबी भारत के रूप में बदल डालें। हमारा प्यारे भारत देश को साम्राज्यवादी जंजीरों से, बड़े सामंतियों व बड़े पूंजीपतियों की सत्ता से लड़कर जीतें।

अभय

अभय
प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा(माओवादी)